भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर

कक्षा - 9 प्रश्न बैंक - अग्नि पथ

1. कवि ने 'अग्नि पथ' किसके प्रतीक स्वरुप प्रयोग किया है?

कवि ने 'अग्नि पथ' को संघर्षमय जीवन के प्रतीक स्वरुप प्रयोग किया है। कवि का मानना है कि मनुष्य का जीवन संघर्षों तथा कठिनाइयों से भरा है। उसे कदम-कदम पर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

2. 'माँग मत', 'कर शपथ', 'लथपथ' इन शब्दों का बार-बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहता है?

कवि ने माँग मत', 'कर शपथ', 'लथपथ' इन शब्दों का बार-बार प्रयोग कर जीवन की कठिनाइयों को सहते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है । कवि का कहना है कि इस मुश्किल भरे रास्ते से घबराकर रास्ता नहीं छोड़ना चाहिए , किसी से भी किसी प्रकार की सुख-सुविधाओं की कामना नहीं करनी चाहिए । न थमने, न थकने और मुड़ने की कसम खानी चाहिए । मनुष्य को इस मार्ग में बिना किसी सहारे, सुखों की अभिलाषा न रखते हुए और हर परिस्थिति का सामना करते हुए अपने लक्ष्य पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

3. 'एक पत्र-छाह भी माँग मत' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

'एक पत्र-छाह भी माँग मत' - इस पंक्ति का आशय यह है कि कठिनाइयों से भरे मार्ग में मानव को किसी सहारे की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उसे हर कठिनाई का सामना स्वत: करते हुए अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ना चाहिए।

4.**निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए।**

(i) तू न थमेगा कभी

तू न मुड़ेगा कभी

भाव – प्रस्तुत पंक्ति का भाव यह है कि कष्टों से भरे इस मार्ग में रुकना और थमना नहीं है। मनुष्य को केवल अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित कर आने वाली चुनौतियों से न घबराकर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

(ii) चल रहा मनुष्य है

अश्रु-स्वेद-रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ

भाव – प्रस्तुत पंक्ति का भाव यह है कि संघर्षमय मार्ग में महान दृश्य यही हो सकता है कि मनुष्य अपना पसीना बहाते हुए, आँसू बहाते हुए ,खून से लथपथ होते हुए भी उस मार्ग पर निरंतर बढ़े चला जा रहा है और यही मनुष्य सफलता प्राप्त करता है।

6. इस कविता का मूलभाव क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- 'अग्नि पथ' कविता कवि 'हरिवंशराय बच्चन' द्वारा रचित एक प्रेरणादायक कविता है। इस कविता के द्वारा कवि मनुष्य को संघर्षमय जीवन में हिम्मत न हारने की प्रेरणा दे रहा है। कवि जीवन को अग्नि से भरा हुआ मानता है।हर पल , हर पग पर चुनौतियाँ मिलती हैं , परंतु इन्हें स्वीकार करना चाहिए , इनसे घबराकर पीछे नहीं हटना चाहिए । इस जीवन में संघर्ष ही संघर्ष है परन्तु मनुष्य को चाहिए कि वह इससे न घबराए, न ही अपना मुँह मोड़े और बिना किसी सहारे की अपेक्षा कर मार्ग में आगे बढ़ते रहे। क्योंकि अंत में ऐसे ही संघर्षशील पुरुषों का जीवन सफल होता है।